पाठ ३ रीढ़ की हड्डी

पाठ का सारांश

'रीढ़ की हड्डी' एक एकांकी है जिसमें एक मध्यवर्गीय परिवार में लड़की देखने की घटना को दिखाया गया है। रामस्वरूप अपनी बेटी उमा की शादी के लिए लड़के वालों के आने की तैयारी करते हैं। घर में सजावट, नाश्ते और दिखावे की पूरी व्यवस्था की जाती है।

लड़के वाले—गोपालप्रसाद और उनका बेटा शंकर—आते हैं। बातचीत के दौरान उनकी संकीर्ण सोच सामने आती है। वे मानते हैं कि लड़की ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं होनी चाहिए, बल्कि सुंदर और घरेलू काम जानने वाली होनी चाहिए।

जब उमा आती है, तो वह सादगी में रहती है और चश्मा लगाए होती है। उससे गाना गाने और अन्य कौशल दिखाने को कहा जाता है, जैसे वह कोई वस्तु हो। शुरुआत में वह चुप रहती है, लेकिन जब उससे सवाल-जवाब किए जाते हैं, तो वह साहस के साथ विरोध करती है।

उमा स्पष्ट रूप से कहती है कि लड़कियों को इस तरह "देखना-परखना" गलत है। वह बताती है कि वह बी.ए. पास है, जिसे उसके पिता ने छिपाया था। वह शंकर की कायरता को उजागर करती है और कहती है कि उसमें "रीढ़ की हड्डी (backbone)" नहीं है।

इस पर लड़के वाले नाराज़ होकर चले जाते हैं। अंत में उमा रो पड़ती है, लेकिन उसकी बातों से उसका आत्मसम्मान और साहस स्पष्ट होता है।

कहानी का संदेश:-

- लड़कियों को वस्तु की तरह देखना और परखना गलत है।
- शिक्षा लड़कियों को आत्मनिर्भर और साहसी बनाती है।
- समाज की पुरानी और गलत सोच (दहेज, कम पढ़ाई) को बदलना जरूरी है।
- आत्मसम्मान सबसे महत्वपूर्ण है—हर व्यक्ति को अपनी इज्जत की रक्षा करनी चाहिए।
- "रीढ़ की हड्डी" का अर्थ है साहस और दृढ़ता—जो उमा में है, लेकिन शंकर में नहीं।

शब्दार्थ:

- अधेड़ — आधी उम्र का, ढलती उम्र का
- तख़्त — लकड़ी की बड़ी चौकी, सिंहासन
- गंदुमी — गेहुँए रंग का
- डाट — टेक, अटकाव
- जंजाल — झंझट, झमेला, संसार का बखेड़ा
- ठठोली — हँसी, परिहास
- करीना — ढंग, क्रम, मेल, समानता
- दकियानूसी — पुराने विचारों वाला
- तालीम — शिक्षा
- चौपट — नष्ट, पूरी तरह बिगड़ा हुआ

- दस्तक — खटखटाना, हल्का आघात
- फितरती — चालबाज, स्वभाव से ऐसा
- खीस निपोरना — दाँत दिखाकर हँसना
- खासियत — विशेषता, गुण
- तशरीफ़ — आदर, सम्मान
- मार्जिन — सीमा, किनारा
- बलाई — ऊपर का हिस्सा
- तकल्लुफ़ — बनावट, औपचारिकता
- माफ़िक — अनुकूल, अनुसार
- मुखातिब — संबोधित करने वाला
- निहायत — अत्यधिक, बहुत अधिक
- जायचा — जन्मपत्री
- अर्ज़ — निवेदन, प्रार्थना
- अधीर — धैर्यहीन, उतावला
- रीढ़ की हड्डी — साहस, दृढ़ता, आत्मसम्मान
- संकोच — झिझक, शर्म
- प्रदर्शन — दिखावा
- व्यवस्था — इंतज़ाम
- सजावट — सजाने की क्रिया
- आत्मसम्मान — अपने प्रति सम्मान का भाव
- विरोध — असहमति जताना
- परखना — जाँच करना, मूल्यांकन करना
- साहस — हिम्मत
- कायरता — डरपोकपन
- स्पष्ट — साफ, बिना झिझक के
- संवाद — बातचीत
- प्रथा — परंपरा
- रूढ़ि — पुरानी परंपरा (अक्सर गलत)
- आलोचना — बुराई बताना
- आधुनिक — नई सोच वाला
- स्वाभाविक — प्राकृतिक, जैसा होना चाहिए
- संवेदनशील — भावनाओं को समझने वाला

अभ्यास

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' का शीर्षक किसका प्रतीक है?

   (क) शरीर के एक आवश्यक अंग का

   (ख) व्यक्ति की ऊँचाई के आधार का

   (ग) आत्म-सम्मान और नैतिक दृढ़ता का

   (घ) शारीरिक शक्ति और परिश्रम का

   उत्तर: (ग) आत्म-सम्मान और नैतिक दृढ़ता का

   कारण: इस एकांकी में "रीढ़ की हड्डी" शारीरिक अंग नहीं, बल्कि साहस, आत्मसम्मान और दृढ़ता का प्रतीक है। उमा अपने आत्मसम्मान के लिए खुलकर बोलती है, जबकि शंकर में यह साहस नहीं है।

2. ‘रीढ़ की हड्डी’ एकांकी में किस पर व्यंग्य किया गया है?

    (क) पात्रों की निर्धनता और लाचारी पर

    (ख) पात्रों की भाषा और हास्य पर

    (ग) विवाह और अशिक्षा पर

    (घ) समाज की अनुचित मान्यताओं पर

    उत्तर: (घ) समाज की अनुचित मान्यताओं पर

    कारण: एकांकी में दहेज प्रथा, लड़की को परखने की प्रथा और संकीर्ण सोच जैसी सामाजिक बुराइयों पर व्यंग्य किया गया है।

3. “घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं” यह वाक्य शंकर की किस छवि को उजागर करता है?

    (क) नैतिक साहस की कमी और चारित्रिक दुर्बलता

    (ख) अनुभव और विवेक की कमी

    (ग) चारित्रिक दृढ़ता और शारीरिक दुर्बलता

    (घ) उदासीनता और एकाकीपन

    उत्तर: (क) नैतिक साहस की कमी और चारित्रिक दुर्बलता

    कारण: उमा का यह कथन दर्शाता है कि शंकर में अपने विचार रखने और सही का साथ देने का साहस नहीं है। वह अपने पिता के सामने कुछ नहीं बोल पाता।

4. “जी हाँ, मैं कॉलेज में पढ़ी हूँ मैंने बी.ए. पास किया है।” उमा की दृष्टि में शिक्षा प्राप्त करने का सही अर्थ है?

    (क) बड़ी-बड़ी डिग्री प्राप्त करना

    (ख) कॉलेज में पढ़ना और नौकरी पाना

    (ग) माता-पिता और पति को प्रसन्न रखना

    (घ) आत्मबल और स्वतंत्र विचार रखना

    उत्तर: (घ) आत्मबल और स्वतंत्र विचार रखना

    कारण: उमा के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री लेना नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर बनना, आत्मविश्वास रखना और स्वतंत्र रूप से सोचने की क्षमता विकसित करना है।

5. गोपालप्रसाद और रामस्वरूप में क्या-क्या समानताएँ हैं?

    (क) दोनों प्रगतिशील हैं और रूढ़ियों को नकारते हैं।

    (ख) दोनों दिखावे और परंपरा के शिकार हैं।

    (ग) दोनों शिक्षा और रूढ़ियों के समर्थक हैं।

    (घ) दोनों संगीत और स्वादिष्ट भोजन के प्रेमी हैं।

उत्तर: (ख) दोनों दिखावे और परंपरा के शिकार हैं।

कारण: दोनों पात्र दिखावे और पुरानी परंपराओं में फँसे हैं—रामस्वरूप बेटी की पढ़ाई छिपाते हैं, जबकि गोपालप्रसाद लड़की को परखने की प्रथा अपनाते हैं।

6. इस एकांकी की संवाद शैली मुख्यतः कैसी है?

(क) औपचारिक और शुष्क

(ख) स्वाभाविक और व्यंग्यपूर्ण

(ग) काव्यात्मक और प्रश्नात्मक

(घ) भावुक और संक्षिप्त

उत्तर: (ख) स्वाभाविक और व्यंग्यपूर्ण

कारण: एकांकी के संवाद सामान्य बोलचाल की भाषा में हैं, जिससे वे स्वाभाविक लगते हैं। साथ ही, उनमें समाज की कुरीतियों पर तीखा व्यंग्य भी किया गया है, जो इस नाटक की विशेषता है।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. बाबू रामस्वरूप समाज में आधुनिक व्यवहार का दिखावा करते हैं, जबकि उनके विचार रूढ़िवादी हैं। इस अंतर्द्वंद्व के उदाहरण एकांकी में से खोजकर लिखिए।

(संकेत— उमा के साथ उनका व्यवहार, विवाह के लिए दिखावे करना किंतु इन प्रयासों को छिपाने की चेष्टा करना आदि।)

उत्तर: बाबू रामस्वरूप के व्यवहार में आधुनिकता का दिखावा और रूढ़िवादी सोच का अंतर्द्वंद्व स्पष्ट दिखाई देता है—

- वे बाहर से खुद को आधुनिक दिखाते हैं, लेकिन वास्तव में पुरानी परंपराओं का पालन करते हैं।
- वे उमा की उच्च शिक्षा (B.A.) को छिपाते हैं, क्योंकि उन्हें डर है कि लड़के वाले ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की पसंद नहीं करेंगे।
- वे घर को सजाकर और विशेष व्यवस्था करके दिखावा करते हैं, पर इसे छिपाने की कोशिश भी करते हैं।
- वे उमा को स्वाभाविक रहने नहीं देते, बल्कि उसे सजने-संवरने और लड़के वालों के सामने "प्रदर्शित" होने के लिए कहते हैं।

2. 'रीढ़ की हड्डी' का संदर्भ दो अलग-अलग पात्रों के लिए भिन्न-भिन्न अर्थों में आया है, उनकी पहचान कीजिए और लिखिए।

उत्तर: एकांकी में 'रीढ़ की हड्डी' (Backbone) का प्रयोग दो प्रमुख अर्थों में हुआ है:

- शंकर (लड़का): उसके लिए 'रीढ़ की हड्डी' का अर्थ नैतिक साहस और दृढ़ता है। वह अपने पिता के सामने अपनी स्वतंत्र राय नहीं रख पाता, इसलिए उसमें "रीढ़ की हड्डी" (साहस) की कमी दिखाई गई है।
- उमा (लड़की): उसके लिए 'रीढ़ की हड्डी' का अर्थ आत्मसम्मान, साहस और स्पष्टता है। वह बिना झिझक अपने विचार व्यक्त करती है और गलत परंपराओं का विरोध करती है, इसलिए उसमें सच्ची "रीढ़ की हड्डी" मौजूद है।

3. “मेरी समझ में तो ये पढ़ाई-लिखाई के जंजाल आते नहीं” प्रेमा की इस सोच से उस समय की स्त्री-शिक्षा की स्थिति के विषय में क्या पता चलता है?

   उत्तर: प्रेमा का यह कहना कि "मेरी समझ में तो ये पढ़ाई-लिखाई के जंजाल आते नहीं", उस समय के समाज की निम्नलिखित स्थितियों को दर्शाता है:

   - शिक्षा को बोझ समझना: उस दौर में स्त्री-शिक्षा को गृहस्थी के लिए 'जंजाल' या बाधक माना जाता था। लोगों का मानना था कि घर चलाने के लिए केवल घरेलू काम और मामूली अक्षर-ज्ञान पर्याप्त है।
   - रूढ़िवादी मानसिकता: प्रेमा स्वयं एक स्त्री होकर भी अपनी बेटी की शिक्षा को उसकी शादी में बाधा मानती है। यह दर्शाता है कि समाज ने महिलाओं के मन में यह बात बैठा दी थी कि उनका मुख्य उद्देश्य केवल विवाह और सेवा है।
   - परिवर्तन का डर: समाज शिक्षित महिला के तर्कों और उसके स्वतंत्र विचारों से डरता था, क्योंकि इससे पुरानी पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती मिलती थी।

4. लेखक ने ‘रीढ़ की हड्डी’ शब्द को एकांकी के शीर्षक के रूप में क्यों चुना होगा? यदि आप इस एकांकी का दूसरा शीर्षक रखना चाहें, जो इसकी मुख्य बात को दर्शाए, तो वह क्या होगा और क्यों?

   उत्तर: रीढ़ की हड्डी शरीर का वह हिस्सा है जो उसे सीधा खड़ा रखता है। लेखक ने समाज को यह संदेश देने के लिए इस शीर्षक को चुना कि जिस समाज में युवाओं का चरित्र (जैसे शंकर) मज़बूत नहीं है और जहाँ महिलाओं को सम्मान नहीं मिलता, वह समाज 'रीढ़-विहीन' यानी खोखला है। यह शीर्षक सामाजिक और व्यक्तिगत नैतिकता का प्रतीक है।

   - दूसरा शीर्षक: यदि मुझे इस एकांकी का दूसरा शीर्षक रखना हो, तो वह "उमा का विद्रोह" या "ढोंग का पर्दाफाश" हो सकता है।
   - कारण: "उमा का विद्रोह" इसलिए, क्योंकि पूरी एकांकी का केंद्र बिंदु उमा का वह साहसी स्वर है जो अंत में सभी पाखंडों को ध्वस्त कर देता है। यह शीर्षक उमा के सशक्त व्यक्तित्व को न्याय प्रदान करेगा।

विधा से संवाद

एकांकी की पड़ताल

आप जानते ही हैं कि ‘रीढ़ की हड्डी’ एक एकांकी है। एकांकी में भी एक कहानी ही होती है, लेकिन एकांकी की रूपरेखा कहानी से थोड़ी अलग होती है।

आगे ‘रीढ़ की हड्डी’ एकांकी से संबंधित कुछ बिंदु दिए गए हैं। एकांकी में से इन बिंदुओं से संबंधित एक-एक उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।

- एकांकी का नाम
- लेखक का नाम
- पात्र
- परिवेश/देश-काल
- रंग-निर्देश/मंच-निर्देश
- संवाद-निर्देश
- समस्या
- संवाद
- मुख्य विचार
- समाधान/परिणाम

उत्तर:

बिंदु	उत्तर/उदाहरण
• एकांकी का नाम	- रीढ़ की हड्डी
• लेखक का नाम	- जगदीश चंद्र माथुर
• पात्र	- उमा, रामस्वरूप, प्रेमा, शंकर, गोपालप्रसाद और रतन।
• परिवेश/देश-काल	- मध्यवर्गीय भारतीय परिवार का घर, जहाँ बेटी के विवाह के लिए मेहमान आने वाले हैं (आजादी के बाद का संक्रमण काल)।
• रंग-निर्देश/मंच-निर्देश	- (मामूली तरह से सजा हुआ एक कमरा। अंदर के दरवाजे से आते हुए जिन महाशय की पीठ नजर आ रही है, वह अधेड़ उम्र के मालूम होते हैं।)
• संवाद-निर्देश	- रामस्वरूप : (ज़रा तेज़ आवाज़ में), गोपालप्रसाद : (खँखारकर), प्रेमा : (बात काटकर)।
• समस्या	- शिक्षित लड़की के विवाह में आने वाली सामाजिक अड़चनें और समाज की दकियानूसी व दोहरी मानसिकता।
• संवाद	- उमा : "क्या लड़कियों के दिल नहीं होता? क्या उनके चोट नहीं लगती? क्या वे बेबस भेड़-बकरियाँ हैं?"
• मुख्य विचार	- नारी शिक्षा का महत्व, आत्म-सम्मान और समाज में व्याप्त लैंगिक भेदभाव पर कड़ा प्रहार करना।
• समाधान/ परिणाम	- उमा द्वारा अपनी शिक्षा और आत्म-सम्मान के पक्ष में तर्क देना, जिससे गोपालप्रसाद का पाखंड उजागर होता है और वे अपमानित होकर चले जाते हैं।

रंग-निर्देश

एकांकी की शुरुआत कुछ इस तरह से होती है—

(मामूली तरह से सजा हुआ एक कमरा। अंदर के दरवाजे से आते हुए जिन महाशय की पीठ नजर आ रही है, वे अधेड़ उम्र के मालूम होते हैं। एक तख्त को पकड़े हुए पीछे की ओर चलते-चलते कमरे में आते हैं। तख्त का दूसरा सिरा रतन ने पकड़ रखा है।)

इस रंग-निर्देश द्वारा एकांकी की पृष्ठभूमि की रचना की गई है, जहाँ से एकांकी आगे बढ़ती है। एकांकी में स्थान, परिवेश, सामाजिक स्थिति आदि के विषय में पाठक और निर्देशक को सटीक जानकारी देने के लिए एकांकीकार/नाटककार प्रायः ऐसे रंग-निर्देशों का प्रयोग करता है। मंचन के समय निर्देशक के पास यह छूट होती है कि वह देश-काल और वातावरण के अनुसार मंच-सज्जा, प्रकाश, पात्रों के वस्त्र आदि में आवश्यक परिवर्तन कर सकता है।

अब इस एकांकी को कक्षा में प्रस्तुत करने का समय है। अपने समूह के साथ मिलकर एकांकी के किसी एक दृश्य का चुनाव कीजिए। उसकी तैयारी कीजिए और कक्षा में उसे प्रस्तुत कीजिए।

(संकेत— (i) समूह बनाइए और उचित हाव-भाव द्वारा उस दृश्य का अभिनय कीजिए। (ii) आप अपनी आवश्यकता के अनुसार दिए गए रंग-निर्देश में परिवर्तन भी कर सकते हैं।)

उत्तर: हमने समूह में मिलकर 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के लड़के वालों के आगमन वाले दृश्य का चयन किया।

- सबसे पहले हमने पात्रों का चयन किया—रामस्वरूप, उमा, गोपालप्रसाद, शंकर और रतन।
- कक्षा में एक कमरे का वातावरण तैयार किया गया, जिसमें तख्त, कुर्सियाँ और साधारण सजावट की गई।
- रंग-निर्देश के अनुसार प्रवेश, बैठने की व्यवस्था और बातचीत का अभ्यास किया गया।
- उमा की झिझक, रामस्वरूप का दिखावा, और गोपालप्रसाद का लड़के को परखने वाला व्यवहार हाव-भाव के साथ प्रस्तुत किया गया।
- संवादों को स्पष्ट और स्वाभाविक ढंग से बोलने का अभ्यास किया गया।

इस प्रकार, हमने उचित हाव-भाव, संवाद और मंच-सज्जा के साथ इस दृश्य का सफलतापूर्वक मंचन किया।

मेरी टिप्पणी

"जी हाँ, जाइए, ज़रूर चले जाइए। लेकिन घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं— यानी बैकबोन, बैकबोन!"

उपर्युक्त वाक्य को ध्यान से पढ़िए। यह वाक्य उमा द्वारा शंकर पर की गई एक टिप्पणी है जो एक व्यंग्य की तरह है।

'टिप्पणी' किसी व्यक्ति, विषय या घटना पर व्यक्त की गई एक संक्षिप्त राय, स्पष्टीकरण या विचार होता है। यह किसी के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी देने, किसी मुद्दे पर नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करने या किसी संदर्भ पर विचारों की अभिव्यक्ति होती है, जो पाठक को उस विषय पर एक नया दृष्टिकोण देती है।

टिप्पणी की कुछ विशेषताएँ हैं—

- संक्षिप्तता — इसमें विषय के मुख्य बिंदुओं को कम शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है।
- स्पष्टता — भाषा सरल, स्पष्ट और तर्कपूर्ण होनी चाहिए।
- व्यक्तिगतता — इसमें व्यक्ति के विचारों और सुझावों को शामिल किया जाता है।

अब आप उमा द्वारा शंकर के लिए कही गई उपर्युक्त बात पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए इस पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर: उमा का यह कथन स्त्री के आत्मसम्मान और पुरुष के चरित्र के बीच के संघर्ष को स्पष्ट करता है। यहाँ 'रीढ़ की हड्डी' का प्रयोग दो अर्थों में किया गया है:

- शारीरिक और मानसिक व्यक्तित्व: उमा का व्यंग्य शंकर की उस शारीरिक कमज़ोरी की ओर इशारा करता है जो उसके आत्मविश्वास की कमी से उपजी है। बिना 'बैकबोन' के व्यक्ति न सीधा खड़ा हो सकता है और न ही जीवन में कोई ठोस निर्णय ले सकता है।
- नैतिक पतन पर चोट: उमा यह उजागर करती है कि जो व्यक्ति (शंकर) महिलाओं के हॉस्टल के आसपास ताक-झाँक करता पकड़ा गया हो, उसका अपना कोई नैतिक आधार नहीं है। ऐसा व्यक्ति जीवनसाथी बनने के योग्य नहीं है क्योंकि उसके पास स्वाभिमान और चरित्र की 'रीढ़' गायब है।
- दोहरे मापदंडों का विरोध: यह टिप्पणी उन पिताओं (गोपालप्रसाद) के लिए भी एक आईना है जो अपनी बहुओं में तो 'मैट्रिक पास' की सादगी ढूँढ़ते हैं, लेकिन अपने बेटों के कुचरित्र और अयोग्यता को नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

कहानी का अंत

किसी कहानी का अंत अनेक प्रकार से हो सकता है जैसे—

1. सुखांत – जब कहानी का अंत प्रसन्नता, सफलता से होता है।
2. दुखांत – जब कथा का अंत दुख, वियोग, मृत्यु या हानि से होता है।
3. मुक्त अंत – जब कहानी स्पष्ट रूप से खत्म नहीं होती, बल्कि सोचने के लिए छोड़ दी जाती है।
4. अप्रत्याशित अंत – जब अंत अचानक और अप्रत्याशित रूप से सामने आता है।
5. यथार्थवादी अंत – जब कहानी का अंत जीवन की सच्चाई जैसा लगे।
6. प्रेरणात्मक अंत – जब कहानी के अंत में कोई प्रेरणा या सकारात्मक सोच दी जाए।
7. व्यंग्यात्मक अंत – जब कहानी का अंत व्यंग्य या कटाक्ष से किसी सत्य को प्रकट करता है।

आपके अनुसार 'संवादहीन' कहानी के अंत को किस श्रेणी में रखा जा सकता है? अपने उत्तर के कारण भी बताइए। आप इस कहानी का नया अंत किस प्रकार करना चाहेंगे?

उत्तर: 'संवादहीन' कहानी का अंत मुख्यतः दुखांत और यथार्थवादी अंत की श्रेणी में रखा जा सकता है।

- कारण: कहानी के अंत में मिट्ठू का उड़ जाना ताई के जीवन में गहरा वियोग और अकेलापन लेकर आता है, जो दुखांत को दर्शाता है। साथ ही, यह अंत पूरी तरह से जीवन की सच्चाई को भी प्रस्तुत करता है कि हर संबंध हमेशा साथ नहीं रहता और अकेलापन मानव जीवन की एक कड़वी सच्चाई है—इसलिए यह यथार्थवादी भी है।
- नया अंत (मेरी कल्पना): मैं इस कहानी का अंत प्रेरणात्मक बनाना चाहूँगा/चाहूँगी।

- ताई मिट्ठू के उड़ जाने के बाद बहुत दुखी होती है, लेकिन धीरे-धीरे वह अपने जीवन को नया अर्थ देती है। वह गाँव के बच्चों और अन्य पक्षियों की देखभाल करने लगती है। इससे उसका अकेलापन कम हो जाता है और वह समझ जाती है कि प्रेम बाँटने से जीवन फिर से खुशियों से भर सकता है।

विषयों से संवाद

तुलना और विचार

1. "गोपालप्रसाद : भला पूछिए इन अक्ल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है।"

   एकांकी में उन पंक्तियों को खोजिए जहाँ एकांकी के पात्रों के व्यवहार में लड़कियों तथा लड़कों के प्रति भिन्न-भिन्न दृष्टि अभिव्यक्त हुई है। अब यह भी लिखिए कि आप इस भिन्नता को किस प्रकार समझते हैं?

   उत्तर: एकांकी में कई ऐसी पंक्तियाँ हैं जहाँ समाज की दोहरी और पक्षपातपूर्ण मानसिकता उजागर होती है।

   - एकांकी से उदाहरण:
     - गोपालप्रसाद का तर्क: "जनाब, मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं; शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।" (वे तर्क देते हैं कि कुछ चीजें जैसे ऊँची तालीम सिर्फ मर्दों के लिए बनी हैं)।

- शिक्षा पर भेदभाव: "मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और काबिल होना... अगर औरतें भी वही करने लगीं... तब तो हो चुकी गृहस्थी।"
- व्यवहार में अंतर: गोपालप्रसाद अपने बेटे शंकर की शारीरिक कमियों (झुकी कमर) और नैतिक कमियों (होस्टल कांड) को नज़रअंदाज़ करते हैं, लेकिन उमा के चश्मे पहनने पर भी आपत्ति जताते हैं और उससे हज़ारों सवाल पूछते हैं।

- इस भिन्नता पर मेरी समझ: यह भिन्नता दर्शाती है कि समाज में पितृसत्तात्मक (Patriarchal) सोच गहरी बैठी हुई है। यहाँ पुरुष को 'शक्ति' और 'ज्ञान' का केंद्र माना गया है, जबकि महिला को केवल एक 'वस्तु' या 'सजावट' की चीज़ समझा गया है जिसकी उपयोगिता केवल घर संभालने और पुरुष को खुश रखने तक सीमित है। यह सोच शिक्षा जैसे मौलिक अधिकार को भी लिंग (Gender) के आधार पर बाँट देती है, जो समाज के सर्वांगीण विकास में सबसे बड़ी बाधा है।

2. “मुझे अपनी इज्जत, अपने मान का ख्याल तो है। लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह अपना मुँह छिपाकर भागे थे।”

एकांकी में उमा अपने अधिकार और विचार खुलकर व्यक्त करती है। इससे उमा के व्यक्तित्व के विषय में क्या-क्या पता चलता है? आपके विचार से उसके व्यक्तित्व में ये विशेषताएँ कैसे आई होंगी?

(संकेत— शिक्षा, परिवार का व्यवहार आदि)

उत्तर: उमा का यह संवाद उसके सशक्त व्यक्तित्व का प्रमाण है।

- उमा के व्यक्तित्व की विशेषताएँ:
  - आत्म-सम्मान (Self-respect): वह खुद को बाज़ार में बिकने वाली मेज-कुर्सी नहीं मानती। वह अपनी गरिमा को किसी भी कीमत पर बचाना जानती है।
  - साहसी और निडर: जहाँ उसके पिता डर रहे थे, वहीं उसने गोपालप्रसाद जैसे प्रभावी व्यक्ति के सामने सच बोलने का साहस दिखाया।
  - तार्किक: वह केवल चिल्लाती नहीं है, बल्कि तर्क देती है कि अगर लड़कों की शिक्षा गर्व की बात है, तो लड़कियों की शिक्षा पाप कैसे हो सकती है?
  - चरित्रवान: वह शंकर के कुचरित्र पर चोट करके दिखा देती है कि वह एक चरित्रहीन व्यक्ति से श्रेष्ठ है।
- ये विशेषताएँ कैसे आई होंगी?
  - शिक्षा का प्रभाव: उच्च शिक्षा (B.A. पास) ने उमा को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया। शिक्षा ने उसे सोचने की शक्ति और तर्क करने का आधार दिया।
  - वैचारिक स्वतंत्रता: हालाँकि उसके पिता ने उसकी पढ़ाई छिपाई, लेकिन उमा ने उस ज्ञान को आत्मसात किया। शिक्षा ने उसके भीतर वह 'रीढ़ की हड्डी' (Backbone) विकसित की, जो समाज के दबाव में झुकती नहीं है।
  - नैतिक संस्कार: उमा का व्यक्तित्व बताता है कि उसने केवल किताबें नहीं पढ़ीं, बल्कि जीवन के मूल्यों को समझा है। उसे अपने परिवार के मान का ख्याल है, इसीलिए वह अंत तक चुप रही, लेकिन जब पानी सिर से ऊपर निकल गया, तो उसने अपनी चुप्पी तोड़ी।
- निष्कर्ष: उमा का चरित्र हमें सिखाता है कि शिक्षा का असली उद्देश्य केवल डिग्री हासिल करना नहीं, बल्कि अपने भीतर वह साहस पैदा करना है जिससे हम अन्याय और दोहरी मानसिकता का विरोध कर सकें।

सृजन

एकांकी का विस्तार

“रतन : बाबूजी, मक्खन!

(सब रतन की तरफ देखते हैं और परदा गिरता है।)”

एकांकी के अंत में रतन कहता है— “बाबूजी, मक्खन...” और परदा गिर जाता है। लेखक ने इस संवाद से एकांकी का अंत क्यों किया होगा?

(संकेत— हास्य, व्यंग्य, टिप्पणी आदि)

एकांकी में यदि परदा दोबारा उठ जाए तो अगला दृश्य क्या होगा? अनुमान लगाइए और लिखिए।

उत्तर:

1. लेखक द्वारा इस संवाद से अंत करने का कारण

लेखक जगदीश चंद्र माथुर ने एकांकी का अंत रतन के संवाद "बाबूजी, मक्खन!" से बहुत सोच-समझकर किया है, जिसके पीछे निम्नलिखित कारण हो सकते हैं:

- तीखा व्यंग्य (Satire): पूरी एकांकी में रामस्वरूप और उनका परिवार मेहमानों की खातिरदारी और दिखावे में व्यस्त रहता है। अंत में जब गोपालप्रसाद और शंकर अपमानित होकर चले जाते हैं और घर की पोल खुल जाती है, तब रतन का मक्खन लेकर आना इस पूरी स्थिति की निरर्थकता पर एक करारा व्यंग्य है। यह दर्शाता है कि जिस 'मक्खन' (चाटुकारिता और दिखावे) के पीछे वे भाग रहे थे, उसका अब कोई औचित्य नहीं रह गया है।
- हास्य और राहत (Comic Relief): उमा के तीखे सवालों और गोपालप्रसाद के गुस्से के कारण मंच पर जो तनावपूर्ण माहौल पैदा हो गया था, उसे रतन का यह भोला और बेवकूफी भरा संवाद अचानक कम कर देता है।
- सामाजिक टिप्पणी: यह संवाद समाज की उस मानसिकता पर टिप्पणी है जहाँ लोग बुनियादी मुद्दों (जैसे उमा का मान-सम्मान) को छोड़कर तुच्छ चीज़ों (जैसे नाश्ता-पानी और मक्खन) में उलझे रहते हैं।

2. यदि एकांकी में परदा दोबारा उठता है, तो अगले दृश्य की कल्पना कुछ इस प्रकार की जा सकती है:

दृश्य का विवरण: मंच पर सन्नाटा है। गोपालप्रसाद और शंकर जा चुके हैं। रामस्वरूप कुर्सी पर सिर थामकर बैठे हैं और उमा अभी भी सिसक रही है। प्रेमा उमा के पास जाकर उसे सहारा देने की कोशिश करती है।

संभावित घटनाक्रम:

- रामस्वरूप का पश्चाताप: रामस्वरूप को अपनी गलती का अहसास होता है कि उन्होंने अपनी बेटी की शिक्षा क्यों छिपाई और उसे ऐसे लोगों के सामने नुमाइश की वस्तु क्यों बनाया। वे उमा से माफी माँग सकते हैं।
- उमा का दृढ़ निश्चय: उमा अपनी सिसकियाँ पोंछकर खड़ी होती है। वह अपने पिता से कहती है कि उसे ऐसे 'रीढ़विहीन' जीवनसाथी की ज़रूरत नहीं है। वह अपनी शिक्षा का उपयोग करके आत्मनिर्भर बनने की बात करती है।
- पारिवारिक संवाद: प्रेमा भी अब उमा का साथ देती है और रामस्वरूप को समझाती है कि उनकी बेटी का आत्म-सम्मान किसी भी रिश्ते से बड़ा है।
- नया सवेरा: दृश्य का अंत इस संकल्प के साथ होता है कि अब वे उमा की शादी के लिए उसकी खूबियों को छिपाएंगे नहीं, बल्कि उस पर गर्व करेंगे।

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

मेरे शब्द

एकांकी में पाँच ऐसे शब्द चुनकर रेखांकित कर लीजिए जो आपके लिए बिल्कुल नए थे। उन शब्दों वाले वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए। अब उन शब्दों के अर्थ अपने अनुमान से लिखिए। इसके बाद उनके अर्थ शब्दकोश में से देखकर लिखिए।

उत्तर:

1. दकियानूसी - पुराने विचारों वाला
    - वाक्य: समाज की दकियानूसी सोच के कारण उमा को अपनी पढ़ाई छिपानी पड़ी।
    - शब्दकोश अर्थ: पुरानी और संकीर्ण सोच रखने वाला
2. तामझाम - दिखावा
    - वाक्य: रामस्वरूप ने लड़के वालों के लिए घर में बहुत तामझाम किया।
    - शब्दकोश अर्थ: अनावश्यक सजावट और आडंबर
3. फितरती - चालाक
    - वाक्य: वह फितरती स्वभाव का व्यक्ति था।
    - शब्दकोश अर्थ: स्वभाव से ही चालबाज या शरारती
4. ठठोली - मजाक
    - वाक्य: दोस्तों के बीच ठठोली चल रही थी।
    - शब्दकोश अर्थ: हँसी-मजाक, परिहास
5. जंजाल - झंझट
    - वाक्य: वह इन सामाजिक जंजालों से परेशान था।
    - शब्दकोश अर्थ: उलझन या झमेला

भाषा में मुहावरे

एकांकी में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। इन वाक्यों में जहाँ-जहाँ मुहावरे आए हैं, उन्हें पहचानकर रेखांकित कीजिए। इन मुहावरों का प्रयोग करते हुए नए वाक्य बनाकर लिखिए—

1. "उनके पीछे-पीछे भीगी बिल्ली की तरह रतन आ रहा है— खाली हाथ।"
2. "लेकिन वह तुम्हारी लाडली बेटी तो मुँह फुलाए पड़ी है।"
3. "और तुम उसकी माँ, किस मर्ज की दवा हो?"
4. "तुम्हीं ने उसे पढ़ा-लिखाकर इतना सिर चढ़ा रखा है।"

5. “मगर तुम तो अभी से सब-कुछ उगले देती हो।”
6. “यह लीजिए, आप तो मुझे काँटों में घसीटने लगे।”
7. “बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था?”
8. “लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह अपना मुँह छिपाकर भागे थे।”

उत्तर:

1. भीगी बिल्ली बनना (भीगी बिल्ली की तरह)
   - वाक्य: "उनके पीछे-पीछे भीगी बिल्ली की तरह रतन आ रहा है— खाली हाथ।"
   - अर्थ: डर से सहम जाना या बहुत सीधा बन जाना।
   - नया वाक्य: जब शिक्षक ने गृहकार्य माँगा, तो शरारती रोहन भीगी बिल्ली बन गया।
2. मुँह फुलाना
   - वाक्य: "लेकिन वह तुम्हारी लाडली बेटी तो मुँह फुलाए पड़ी है।"
   - अर्थ: रूठना या नाराज़ होना।
   - नया वाक्य: खिलौना न मिलने पर छोटी बच्ची मुँह फुलाकर कोने में बैठ गई।
3. किस मर्ज़ की दवा होना
   - वाक्य: "और तुम उसकी माँ, किस मर्ज़ की दवा हो?"
   - अर्थ: किसी काम का न होना या सहायता न कर पाना (व्यंग्य के रूप में)।
   - नया वाक्य: यदि तुम मुसीबत में दोस्त के काम नहीं आ सकते, तो तुम किस मर्ज़ की दवा हो?
4. सिर चढ़ाना
   - वाक्य: "तुम्हीं ने उसे पढ़ा-लिखाकर इतना सिर चढ़ा रखा है।"
   - अर्थ: बहुत अधिक लाड़-प्यार देकर बिगाड़ देना।
   - नया वाक्य: माता-पिता को बच्चों की जायज़ माँगें ही माननी चाहिए, उन्हें सिर चढ़ाना ठीक नहीं।
5. उगल देना (उगले देती हो)
   - वाक्य: "मगर तुम तो अभी से सब-कुछ उगले देती हो।"
   - अर्थ: गुप्त बात या रहस्य को प्रकट कर देना।
   - नया वाक्य: पुलिस की सख्ती बढ़ते ही चोर ने सारा सच उगल दिया।
6. काँटों में घसीटना
   - वाक्य: "यह लीजिए, आप तो मुझे काँटों में घसीटने लगे।"
   - अर्थ: मुश्किल में डालना या असमंजस की स्थिति पैदा करना।
   - नया वाक्य: उधार न चुका पाने के कारण रामू स्वयं को काँटों में घसीटा हुआ महसूस कर रहा था।

7. इज्जत उतारना
    - वाक्य: "बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था?"
    - अर्थ: अपमानित करना या बेइज्जती करना।
    - नया वाक्य: भरी सभा में किसी की कमियाँ बताकर उसकी इज्जत उतारना अच्छी बात नहीं है।
8. मुँह छिपाना
    - वाक्य: "लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह अपना मुँह छिपाकर भागे थे।"
    - अर्थ: लज्जित होना या शर्मिंदा होना।
    - नया वाक्य: परीक्षा में फेल होने के बाद वह सबसे अपना मुँह छिपाता फिर रहा है।

संदर्भ में शब्द

“बाप शेर है तो लड़का सवा शेर।”

एकांकी में इस कहावत का प्रयोग रामस्वरूप द्वारा गोपालप्रसाद और शंकर की नकारात्मक प्रवृत्ति का उल्लेख करने के लिए किया गया है। लेकिन इस कहावत का प्रयोग सकारात्मक अर्थ में भी किया जा सकता है। अब आप इस नए प्रयोग से वाक्य बनाकर लिखिए।

उत्तर: सकारात्मक अर्थ में नए वाक्य प्रयोग:

- वीरता के संदर्भ में: "महाराणा प्रताप अपने पिता उदय सिंह से भी अधिक पराक्रमी सिद्ध हुए; सच ही कहा गया है कि बाप शेर है तो लड़का सवा शेर।"
- खेल के संदर्भ में: "पिता ने ज़िला स्तर पर क्रिकेट खेला था, पर बेटे ने राष्ट्रीय टीम में जगह बनाकर साबित कर दिया कि बाप शेर है तो लड़का सवा शेर।"
- व्यवसाय के संदर्भ में: "आदित्य ने अपने पिता के छोटे से व्यापार को अपनी मेहनत से एक बड़ी कंपनी में बदल दिया; इसे कहते हैं कि बाप शेर है तो लड़का सवा शेर।"
- शिक्षा के संदर्भ में: "गाँव के मास्टर जी का बेटा जब कलेक्टर बनकर लौटा, तो सबने यही कहा कि बाप शेर है तो लड़का सवा शेर।"

गतिविधियाँ

आप भी संवाददाता

1. मान लीजिए कि आप एक संवाददाता हैं और आपको उमा की कहानी का पता चलता है। अब आप उमा तथा अन्य पात्रों का साक्षात्कार लेकर उनका पक्ष दर्शकों के सामने प्रस्तुत कीजिए।

    उत्तर: जीवंत प्रसारण (Live Reporting): रामस्वरूप जी के घर से

    (कैमरा एक मध्यमवर्गीय घर के बैठक में खुलता है, जहाँ हलचल मची हुई है)

नमस्कार! मैं इस वक्त बाबू रामस्वरूप जी के घर के बाहर खड़ा हूँ। अंदर एक बेहद महत्वपूर्ण मुलाकात चल रही है। गोपालप्रसाद जी अपने बेटे शंकर के लिए लड़की देखने आए हैं। लेकिन दर्शकों, यहाँ का माहौल कुछ अजीब है। मेजबान रामस्वरूप जी थोड़े घबराए हुए दिख रहे हैं—वे कभी हारमोनियम सेट कर रहे हैं तो कभी रतन को मक्खन लेने भेज रहे हैं।

अंदर से आवाज़ें आ रही हैं... गोपालप्रसाद जी लड़कियों की पढ़ाई को 'जंजाल' बता रहे हैं। वे उमा (लड़की) से ऐसे सवाल पूछ रहे हैं मानो वह कोई सजीव प्राणी नहीं बल्कि बाज़ार में रखी मेज-कुर्सी हो! और देखिए... उमा कमरे में आ गई है। चश्मा पहने हुए, सादगी में लिपटी हुई।

ओह! यह क्या? उमा ने चुप्पी तोड़ दी है! वह शंकर की असलियत बता रही है कि कैसे वह पिछले फरवरी में लड़कियों के हॉस्टल के पास पकड़ा गया था। गोपालप्रसाद जी गुस्से में लाल-पीले हो रहे हैं। वे अपनी छड़ी उठाकर बाहर निकल रहे हैं। यह एक ऐतिहासिक पल है—एक लड़की ने अपनी शिक्षा और आत्म-सम्मान के लिए स्टैंड लिया है!"

2. मान लीजिए कि आप उमा के घर से रिपोर्टिंग कर रहे हैं जब उसके घर में शंकर आया था। इस पूरे घटनाक्रम को जीवंत प्रसारण (लाइव रिपोर्ट) की तरह प्रस्तुत कीजिए।

   उत्तर: विशेष साक्षात्कार (Exclusive Interviews)

   (घटना के बाद, संवाददाता पात्रों से बातचीत करता है)

   - पक्ष 1: उमा (सशक्त नायिका)
     - संवाददाता: उमा, आपने जो किया उसके लिए बहुत साहस चाहिए। आपने अपनी शादी टूटने की परवाह नहीं की?
     - उमा: "शादी टूटने का डर उन्हें होता है जिनकी कोई पहचान नहीं होती। क्या लड़कियों के दिल नहीं होता? क्या हमें चोट नहीं लगती? मैंने बी.ए. पास किया है, कोई पाप नहीं किया। मुझे ऐसे घर में जाने से बेहतर अकेले रहना पसंद है जहाँ मेरी पढ़ाई को गुनाह और मेरे व्यक्तित्व को बोझ समझा जाए।"
   - पक्ष 2: गोपालप्रसाद (लड़के के पिता)
     - संवाददाता: गोपालप्रसाद जी, आप उमा की शिक्षा से इतने नाराज़ क्यों हुए?
     - गोपालप्रसाद: "साहब, जमाना खराब है। मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं। लड़कियों को पढ़ा-लिखाकर क्या फायदा? उन्हें तो बस घर संभालना चाहिए। रामस्वरूप ने हमसे झूठ बोला कि लड़की सिर्फ मैट्रिक है। बी.ए. पास बहू हमें नहीं चाहिए, वह तो घर में हुकूमत चलाएगी!"
   - पक्ष 3: बाबू रामस्वरूप (लड़की के पिता)
     - संवाददाता: रामस्वरूप जी, आप अपनी बेटी की पढ़ाई छिपाकर क्या हासिल करना चाहते थे?
     - रामस्वरूप: (सिर झुकाकर) "क्या करता? समाज की रीत ही ऐसी है। पढ़े-लिखे लोग भी कम पढ़ी-लिखी बहू चाहते हैं। मैं तो बस अपनी बेटी का घर बसाना चाहता था, लेकिन आज उसकी आँखों की चमक ने मुझे अहसास करा दिया कि झूठ की बुनियाद पर कोई रिश्ता नहीं टिक सकता।"
   - पक्ष 4: शंकर (लड़का)
     - संवाददाता: शंकर, उमा ने आपकी 'बैकबोन' (रीढ़ की हड्डी) पर सवाल उठाया है। आपका क्या कहना है?
     - शंकर: (नज़रें चुराते हुए) "चलिए बाबूजी... यहाँ बेकार में बेइज्जती हो रही है।"

संवाददाता की अंतिम टिप्पणी:- "तो दर्शकों, आपने देखा। 'रीढ़ की हड्डी' सिर्फ शरीर का हिस्सा नहीं, बल्कि इंसान के चरित्र और स्वाभिमान का प्रतीक है। उमा ने आज साबित कर दिया कि शिक्षा बोझ नहीं, बल्कि वह शक्ति है जो गलत के खिलाफ आवाज़ उठाने का हौसला देती है। क्या हमारा समाज ऐसी सशक्त बहुओं को अपनाने के लिए तैयार है? सोचिएगा ज़रूर!"

भाषा संगम

"<u>मक्खन</u> वाले की दुकान दूर है"

नीचे 'मक्खन' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

मक्खन (हिंदी); नवनीतम् (संस्कृत); मक्खण (पंजाबी); मक्खन (उर्दू); डॅन्य (कश्मीरी); मखणु (सिंधी); लोणी (मराठी); माखण, नवनीत (गुजराती); लोणी (कोंकणी); नौनी, माखन (नेपाली); माखन, ननी (बांग्ला); माखन (असमिया); माखोन (मणिपुरी); लहुणी, मक्खन (ओड़िआ); वेन्नै (तेलुगु); वेण्णै (तमिल); वेण्ण (मलयालम); वेण्णे (कन्नड़)।

इनके अतिरिक्त यदि आप 'मक्खन' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।

उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp

उत्तर: संविधान की आठवीं अनुसूची में दी गई भाषाओं के अलावा, 'मक्खन' शब्द को कुछ अन्य क्षेत्रीय और विदेशी भाषाओं में इस प्रकार कहा जाता है:

अन्य भाषाओं में 'मक्खन' शब्द

- अंग्रेज़ी (English): बटर (Butter)
- ब्रजभाषा: माखन (जैसे— "मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो")
- भोजपुरी: नेनू या मक्खन
- मारवाड़ी: लोणो या घी-मक्खन
- फ्रेंच (French): ब्यूर (Beurre)
- स्पैनिश (Spanish): मेंटेक्विला (Mantequilla)

मातृभाषा में वाक्य अनुवाद

आपकी मातृभाषा के अनुसार "मक्खन वाले की दुकान दूर है" वाक्य के कुछ उदाहरण अनुवाद नीचे दिए गए हैं:

- अंग्रेज़ी (English): "The butter seller's shop is far away."
- भोजपुरी (Bhojpuri): "मक्खन वाला के दुकान दूर बा।"
- मारवाड़ी (Marwari): "माखण आळी दुकान दूर है।"
- मैथिली (Maithili): "मक्खन बला के दोकान दूर अछि।"

खोजबीन

नीचे दिए गए लिंक का प्रयोग करके आप एकांकी विधा और रीढ़ की हड्डी एकांकी के विषय में और अधिक जान-समझ सकते हैं—

एकांकी

https://www.youtube.com/watch?v=JKHLpQ4p534

रीढ़ की हड्डी

https://www.youtube.com/watch?v=6T6Tnn3Eg1w

उत्तर: विधार्थी स्वयं कीजिए।